जन संपर्क एवं मीडिया समन्वयक कार्यालय

जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति 08 अगस्त 2018

भारत में धर्मनिरपेक्षता थोपी हुई न होकर, उसकी दार्शनिक परंपरा का हिस्सा है

लंदन स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स एवं राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर सुमंत्रा बोस ने जामिया मिल्लिया इस्लामिया : जेएमआईः में आयोजित एक व्याख्यान में कहा कि भारत में धर्मनिरपेक्षता इसलिए मज़बूत है क्योंकि यह इस देश की बौद्धिक और दार्शनिक परंपरा का हिस्सा है, न कि पश्चिमी देशों से उधार लिए गए सेक्युलरिज़्म की नक़ल।

जेएमआई के विधि विभाग द्वारा आयोजित '' भारत, तुर्की और धर्मनिरपेक्षता '' विषय पर आयोजित व्याख्यान में उन्होंने कहा कि तुर्की में इसके उल्ट पश्चिमी देशों के ' सेक्युलरिज़्म ' की अवधारणा को उधार लेकर अपने समाज पर थोपा गया। इसका नतीजा यह हुआ कि वहां धर्मनिरपेक्षता अब कमज़ोर पड़ने लगी है।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता विधि विभाग की डीन प्रोफेसर नुज़हत परवीन खान ने की।

प्रो बोस ने कहा तुर्की में पश्चिम के धर्मनिरपेक्षता के उधार लिए गए विचार को अपने सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक जीवन पर थोपा गया। उन्होंने कहा कि इसी कारण अब वहां धर्मनिरपेक्षता के विचार और पालन में गिरावट देखने को मिल रही है। उनके अनुसार इन दिनों तुर्की में धार्मिकता का उत्थान वहां धर्मनिरपेक्षता के खिलाफ आने वाले बदलाव की ओर इशारा कर रहा है।

उन्होंने कहा, दूसरी ओर भारत की धर्मनिरपेक्षता देश की बहुलवादी प्रकृति से पैदा हुई व्यवहारिक ज़रूरतों का नतीजा है। भारत के बारे में उन्होंने कहा कि इस देश ने विभिन्न विचारों की स्वीकार्यता और सह अस्तित्व के अपने दर्शन की बुनियाद पर इसे अपनाया है। धर्मनिरपेक्षता भारतीय बौद्धिक एवं दार्शनिक परंपरा का हिस्सा है जिसे वहां के लोगों ने अपने दैनिक जीवन में अपनाया है। इसलिए भारतीय समाज में धर्मनिरपेक्षता कायम रहेगी।

अपने व्याख्यान में उन्होंने कहा कि दूसरी ओर तुर्की में पश्चिम की सेक्युलरिज़्म अवधारणा चूंकि समाज और राजनीतिक व्यवस्था पर जबरन थोपी गई थी, इसलिए भविष्य में वहां यह पूरी तरह खत्म हो जाएगी।

उन्होंने कहा कि हाल के दिनों में भारत में हालांकि दक्षिणपंथी ताकतों द्वारा धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा पर हमले हो रहे हैं, लेकिन इसके बावजूद यह अपनी मज़बूत स्वदेशी जड़ों और मौजूदा वास्तविकताओं के अनुरूप खुद को ढालने की क्षमता के चलते इसके अस्तित्व को बनाए रखेगा।

अहमद अज़ीम

पीआरओ एवं मीडिया कोऑर्डनैटर